अजायब बानी

मासिक पत्रिका

दिसम्बर-2022

RNI No - RAJHIN/2003/9899

मासिक पत्रिका

अजायब बानी

वर्ष–बीसवां | अंक–आठवां | दिसम्बर–2022

3 अहंकार
सतसंग– परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

13 शादी–तलाक
परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब

25 परमात्मा की तलाश
परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के मुखारविन्द से

30 भजन–अभ्यास
परम सन्त अजायब सिंह जी द्वारा प्रेमियों को भजन में बिठाने से पहले

प्रकाशक : **सन्तबानी आश्रम** 16 पी.एस. रायसिंह नगर–335 039 जिला–श्री गंगानगर (राजस्थान)

संपादक : **प्रेम प्रकाश छाबड़ा** 99 50 55 66 71 80 79 08 46 01

विशेष सलाहकार : **गुरमेल सिंह नौरिया** 96 67 23 33 04 99 28 92 53 04

उप संपादक : **नन्दनी** सहयोग : **डॉ सुखराम सिंह**

e-mail : dhanajaibs@gmail.com 249 Website : www.ajaibbani.org

RSG-01, V.I.P. Colony, Ridhi-Sidhi Enclave Ist, Sri Ganganagar - 335 001 (Rajasthan)

14 जनवरी 1987
मुम्बई

सतसंग– परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

अहंकार

गुरु रामदास जी की बानी

DVD - 528(3)

रामा हम दासन दास करीजै।। रामा हम दासन दास करीजै।।

सभी सन्त–महात्मा दुनिया में यही संदेश देते हैं कि इस दुनिया में **अहंकार** न करें, अहंकार प्रभु को पसंद नहीं। वे इतनी नम्रता से कहते हैं कि जो तेरी भक्ति करते हैं, तेरे दास हैं तू हमें उनका भी दास बना दे। कहने में यह लफ्ज छोटा लगता है लेकिन दास बनना बहुत ही मुश्किल है।

बेशक हम कह दें कि हम दास हैं लेकिन जब मालिक की मौज में चलने का मौका मिलता है या कोई ऐसी समस्या खड़ी हो जाती है तो हम सवाल–जवाब करते हैं, उसमें अपनी राय भी देते हैं। गुरु नानकदेव जी कहते हैं, ''जो दास होता है, उसे दास या नौकर कुछ भी कह लें, उसे जो हुक्म मिलता है वह उसे मानता है फिर आकर पूछता भी है कि महाराज जी अब आपका क्या हुक्म है?''

महात्मा हमें बताते हैं कि ये नम्रता दुनियादारी में भी हमारे बहुत काम आती है। हर व्यक्ति अपनी बड़ाई, अपना इल्म पेश कर रहा है। हर आदमी यह कहता है कि मैं सच्चा हूँ, मैं ज्यादा अक्ल वाला हूँ, मैं ज्यादा धनी हूँ या मैं ज्यादा जवान हूँ। हम सारा दिन अपनी ही नुमाईश करते हैं, नुमाईश करते हुए हम दूसरे का बिल्कुल भी ध्यान नहीं करते।

हम यहाँ किस चीज का मान करें? सोचकर देखें, बच्चे हैं तो बालपना नहीं रहता, जवान हो जाते हैं तो जवानी नहीं रहती आखिर बुढ़ापा आ जाता है। आज हम धनी हैं लेकिन हम यह भूल जाते हैं जब हम लोगों को सड़क पर भीख माँगते हुए देखते हैं। जिदंगी में यह भी देखते हैं कि कभी वे भी धन–पदार्थ के मालिक थे लेकिन कर्मों की वजह से ही यहाँ गरीब या

धनी बनते हैं। कर्मों की वजह से ही हमारे ऊपर मेहनत करने या आलस करने का असर पड़ता है।

महात्मा बताते हैं कि इस दुनिया में बड़े-बड़े डिक्टेटर आए, उनके मुँह से निकला हुआ लफ्ज कानून बन जाता था लेकिन आज वे मैं-मेरी को छोड़कर कब्रों में सोए हुए हैं। इसी तरह कोई वक्त आएगा कि हम भी कब्रों में चले जाएंगे, आज उनकी धूल हमारी आँखों में पड़ रही है। वक्त आने पर हमारी कब्रों की धूल औरों की आँखों में पड़ेगी। अगर हम मजबूरी की वजह से नम्रता रखेंगे तो यह एक किस्म का धोखा है। अगर हम किसी खास रूतबे पर हैं, मान-तान होते हुए भी हम अपने-आपको निमाणा कहें तो पता लगता है कि हमारे अंदर सच्ची नम्रता है।

भजन-सिमरन करने से ही नम्रता आती है। हम दुनिया को खाली हाथ जाते हुए देखते हैं। जब हम भजन-सिमरन करते हैं तो आत्मा शरीर को छोड़कर ऊपर चली जाती है फिर पता लगता है कि यह दुनिया चलती सराय है। हम यहाँ किस चीज का **अहंकार** करते हैं? यहाँ न राजा रहता है न गरीब रहता है लेकिन उस समय पता लगता है जब हम प्रेम-प्यार से भजन-सिमरन करते हैं।

गुरु रामदास जी का गुरु अमरदेव जी के साथ दुनियावी तौर पर बहुत गहरा रिश्ता था। गुरु अमरदेव की लड़की की शादी गुरु रामदास जी के साथ हुई थी। हिन्दुस्तान में अभी भी यह रिवाज है, पहले तो यह रिवाज इससे भी ज्यादा था कि लोग दामाद का ज्यादा से ज्यादा आदर-मान करते थे। दामाद भी उस घर में जाकर सिर्फ अच्छे पलंग पर बैठना ही जानता था और ज्यादा से ज्यादा मान चाहता था। रामदास जी ने एक दिन भी यह साबित नहीं किया कि मैं इस घर का दामाद हूँ बल्कि अपने ससुर को भगवान समझा, कुलमालिक समझा। वे अपने आपको कहते हैं कि मुझे इनके दासों का दास बना दें।

गुरु रामदास जी एक पवित्र आत्मा थे लेकिन आप उस घर में दास ही बनकर रहे। गुरु रामदास जी ने ही सेवा नहीं की बल्कि उनकी धर्मपत्नी बीबी भानी ने भी अमरदेव जी को कुलमालिक समझकर सेवा की, भजन–सिमरन किया। सिक्ख इतिहास में इनकी सेवा की खास महानता है।

जब लग साँस होएं मन अंतर साधु धूर पिवीजै।।

आप कहते हैं कि जितनी देर अंदर साँसों की गतिविधि चलती रहे, उतनी देर मालिक के प्यारों की धूड़ी को लोचते रहें। नम्रता से उनके चरणों का आसरा लेकर चलें।

संकर नारद सेखनाग मुनि धूर साधु की लोचीजै।।

शिव, मुनिजन और सभी देवताओं ने अपनी लेखनियों में साधु की धूड़ का जिक्र किया है। सब साधु की धूड़ को लोचते हैं लेकिन यह धूड़ भाग्य से ही मिलती है। मिश्री की कद्र वही करेगा जिसने मिश्री खाई है। साधुओं की धूड़ की कद्र वही करेगा जो उसकी कीमत को समझता है। जो अंदर जाता है वह समझता है कि साधु की धूड़ की कितनी महानता है।

भवन भवन पवित होएं सभ जहँ साधु चरन धरीजै।।

आप प्यार से कहते हैं, ''वह जगह पवित्र मानी जाती है जहाँ साधुओं के चरण पड़ जाते हैं। जहाँ साधु आकर बैठ जाते हैं वह घर पवित्र माना जाता है। वक्त पाकर वही पूजा के स्थान बन जाते हैं।''

हिन्दुस्तान में ज्यादातर तीर्थ उन्हीं स्थानों पर बने हुए हैं जहाँ महात्माओं ने बैठकर नाम का अभ्यास किया, सतसंग किया, लोगों में नाम का प्रचार किया। हमारे राजस्थान में भी एक मशहूर तीर्थ कोलायत है, वहाँ कपिल मुनि ने तप–अभ्यास किया था। इसी तरह पंजाब में भी जहाँ कोई धर्मस्थान बना है वे स्थान गुरु साहिबानों के प्यार में बनाए गए हैं। वहाँ गुरुओं ने सतसंग, भजन–अभ्यास किया, लोगों को नाम के साथ जोड़ा।

पैगम्बर मोहम्मद साहब सऊदी अरब में पैदा हुए। मुसलमानों के जामें में पैदा होने वाले वहाँ की यात्रा करना पवित्र समझते हैं, वहाँ जाने में मुक्ति समझते हैं। जहाँ क्राईस्ट का जन्म हुआ, उनका बचपन बीता लोग अभी भी उसे धर्मस्थान समझते हैं, श्रद्धा से वहाँ की यात्रा करते हैं। सारी जगह ही धरती और आसमान है लेकिन उस थोड़ी सी जगह को इसलिए पवित्र समझा जाता है क्योंकि वहाँ महात्मा ने तप–अभ्यास किया होता है।

गुरु रामदास जी कहते हैं, ''वह धरती पवित्र है, वह घर पवित्र है जहाँ महात्मा आकर रहता है या उस धरती पर अपने चरण रखता है।'' एक बार की बात है कि मुझे बाबा सावन सिंह जी के नीचे चादर बिछाने का मौका मिला। वे सड़क की देखभाल करवा रहे थे, वे खेत में आए। वहाँ कुर्सी का इंतजाम नहीं था, मैंने उनके नीचे चादर बिछा दी, उसके बाद मैंने वह चादर बहुत ही इज्जत से संभालकर रखी हुई है। मेरे दिल में हमेशा ही उस चादर के लिए इज्जत है। बेशक आज के जमाने के मुताबिक वह चादर कोई खास कीमती नहीं, मामूली कपड़ा है।

जब दयालु कृपाल मेरे आश्रम में आए, मैंने वही चादर दयालु कृपाल के नीचे बिछाई। अगर किसी को वह चादर दिखाएं तो वह कहेगा कि यह कितना पागल है, इसने इतना मामूली सा कपड़ा किस तरह संभालकर रखा हुआ है लेकिन उसके पीछे प्यार छिपा हुआ है, खुशबू छिपी हुई है। इस चादर को सतगुरु महाराज की चरण धूड़ प्राप्त है।

तज लाज अहंकार सभ तजीऐ मिल साधु संग रहीजै।।

अब आप प्यार से कहते हैं, ''महात्मा की शरण में जाने के लिए हमें कुछ न कुछ त्याग अवश्य करना पड़ता है, लोक–लाज सबसे बड़ी रूकावट है। आमतौर पर हम कह देते हैं कि यह साधु हमसे ज्यादा पढ़ा–लिखा नहीं, हम ज्यादा अच्छे तरीके से बोल सकते हैं। कोई इंसान ऊँची

पदवी पर होता है तो वह सोचता है कि इस साधु–फकीर के पास क्या है, मैं इसके पास जाऊँगा तो लोग मुझे क्या कहेंगे? आप अपने **अहंकार** को छोड़ दें, लोक–लाज को छोड़ दें तभी कुछ प्राप्त कर सकते हैं।''

एक बार की बात है, हुजूर कबीर साहब की बानी पर सतसंग कर रहे थे लेकिन मालिक की मौज वे कबीर साहब की जगह पल्टू साहब का नाम ले बैठे। कुछ समय बाद एक आदमी ने मेरे साथ बात की वैसे तो आपके गुरुदेव पढ़े–लिखे हैं, विश्व धर्म के अध्यक्ष भी हैं लेकिन उन्होंने कबीर साहब की जगह पल्टू साहब का नाम क्यों लिया? मैंने कहा प्यारेया, मैं ज्यादा तो कुछ नहीं कह सकता लेकिन गुरु नानकदेव जी ने लिखा है कि जिनके अंदर प्यार उमड़ता है परमात्मा का प्रेम है, वे जैसे भी बोलते हैं संगत को प्यारे लगते हैं। प्रेमी, गुरु के पास ऊँचे–लम्बे भाषण सुनने के लिए नहीं आते वे तो सिर्फ दर्शनों के लिए ही आते हैं, उन्हें दर्शनों की कीमत का पता है कि दर्शन क्या है।

अफसोस की बात है कि सतसंग में हजारों अच्छी बातें कही जाती हैं हम उन पर अमल नहीं करते अगर जल्दी में कोई लफ्ज गलत बोला गया तो हम उसे पकड़ लेते हैं। मेरे पास एक टीचर काफी समय तक आता रहा उसे यही मान था कि मैं ज्यादा पढ़ा–लिखा हूँ, यह कम पढ़े–लिखे हैं। जब कैंट बिकनल 16 पी. एस. आश्रम आया, उस टीचर को पता लगा कि यह प्रिसिंपल है, काफी पढ़ा–लिखा है इससे सवाल किया जाए? उस टीचर ने कैंट बिकनल से सवाल किया, ''ये आपकी भाषा नहीं जानते और न ही आपकी भाषा बोल सकते हैं तो आपको क्या फायदा होता है?''

कैंट बिकनल ने कहा, ''ये न भी बोलें फिर भी हम इनके प्यार को समझते हैं, प्यार तो आँखें ही लेती हैं और आँखें ही देती हैं। हमें पढ़–पढ़ाई से कोई मतलब नहीं, हम तो प्यार भरी आँखों का नजारा लेने के लिए आते हैं।'' मालिक की मौज हुई उस टीचर को अफसोस हुआ कि

मैं किस तरफ रहा आखिर उसने थोड़े दिनों बाद नामदान ले लिया। आज वह नाम की कमाई करता है बल्कि इज्जत करता है।

इंटरव्यू में सारे ही लोग लम्बी-लम्बी लेखनियाँ लिखकर नहीं लाते, कई तो ऐसे होते हैं जो आकर बैठ जाते हैं और कहते हैं कि बस, एक मिनट आपकी तरफ देखना ही है। सोचकर देखें, उनके दिल के अंदर कितना प्यार-मौहब्बत है, वे प्यार को कितना समझ रहे होते हैं। भाई नंदलाल, गुरु गोबिंद सिंह जी का अच्छी कमाई वाला शिष्य था। उसने अपने गुरुदेव से यही कहाः

तेरी इक नजर है, मेरी जिंदगी का सवाल है।

मैं न राज्य माँगता हूँ न मुक्ति माँगता हूँ, मैं तेरी ईक नजर माँगता हूँ। तेरी एक नजर ही मेरी जिंदगी है। हजरत बाहु ने भी यही कहा :

ईक निगाह जे मुर्शिद तक्के लख करोड़ा तारे हू
लख निगाह जे आलम तक्के किसे न कंधी चाढ़े हू

अगर पूरा मुर्शिद प्रेम-प्यार से हमारी तरफ दृष्टि डालता है तो वह लाखों-करोड़ों का उद्धार कर देता है। आलिम-फाजिल अगर हजारों बार भी हमारी तरफ दृष्टि डालें तो वे किसी को किनारे नहीं लगा सकते।

धरमराय की कान चुकावै बिख डुबदा काढ कढीजै।।

आप कहते हैं, ''धर्मराज का नाम सुनकर हम थर-थर काँपते हैं कि पता नहीं यह क्या करेगा, लेकिन महात्मा की शरण में जाने का यह फायदा है कि दयालु गुरु नाम देकर हमारी आत्मा को ताकत बख्शता है। आत्मा मजबूत हो जाती है, आत्मा को पता है कि मैंने गुरु के पास जाना है, अब धर्मराज मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकता।'' गुरु नानकदेव जी कहते हैंः

धर्मराय दर कागद फारे जन नानक लेखा समझा

भरम सूके बहु उभ सुक कहीऐ मिल साधु संग हरीजै।।

अब आप प्यार से कहते हैं, ''आज तक हमने जितने भी जन्म लिए सब भ्रम में ही निकाल दिए। हम जो आँखों से देखते हैं यह सारा ही सामान नष्ट हो जाना है, यह देह भी एक भ्रम ही है आखिर इस देह ने भी हमारा साथ नहीं देना। हम उस पेड़ की तरह हैं जो खड़ा-खड़ा सूख जाता है, चाहे उस पेड़ को हम कितना भी पानी दे दें वह फिर से हरा-भरा नहीं होता। अगर हमारी आत्मा साधु की संगत में जाकर नाम का अभ्यास करे तो यह हरी हो जाती है, यह भी प्यार से भरपूर हो जाती है फिर से यह प्यार से जुड़ जाती है।''

तां ते बिलम पल ढिल न कीजै जाय साधु चरन लगीजै।।

आप कहते हैं, ''प्यारेया, तू ढील न कर, आज का काम कल पर न छोड़। महात्मा से नाम लेकर नाम की कमाई कर।'' कबीर साहब कहते हैंः

साधु की संगत करिए अंत करे निर्वाह

राम नाम कीरतन रतन वत्थ हर साधु पास रखीजै।।

आप प्यार से कहते हैं, ''हमने साधु के पास इसलिए जाना है क्योंकि परमात्मा ने साधु को वह कीर्तन दिया होता है, वह नाम दिया होता है जिसके साथ जुड़कर हम वापिस अपने घर सच्चखंड पहुँच सकते हैं। वह कीर्तन, वह नाम सच्चखंड से उठकर हम सबके माथे के पीछे धुनकारे दे रहा है, वहाँ कौम-मजहब या मुल्क का कोई सवाल नहीं।''

जो बचन गुर सत सत कर मानै तिस आगै काढ धरीजै।।

अब आप प्यार से कहते हैं कि महात्मा बेइंसाफ नहीं होते। महात्मा के पास नाम का, कीर्तन का पदार्थ है, जो महात्मा का कहना मानकर नाम जपते हैं वे अपनी जिंदगी पवित्र बना लेते हैं। महात्मा उन्हें यह पदार्थ देकर कहते हैं, ''ले बेटा यह तेरी जायदाद है।'' हम भजन नहीं करते इसलिए शिकायत करते हैं कि मन नहीं टिकता, आप दया करें।

महाराज कृपाल कहा करते थे, ''देने वाले का कोई कसूर नहीं सवाल तो लेने वाले का है।'' लेकिन हमारा मन अपने ऊपर कभी इल्जाम नहीं लेता कि मैं कभी भजन पर तो बैठा नहीं, गुरु ने मुझे जो बताया मुझे उस पर तो ऐतबार नहीं? यह ऐसी चीज तो है नहीं कि दया की मुट्ठी भरी और दूसरे के पल्ले बाँध दी। जिन सेवकों ने प्यार और विश्वास के साथ कमाई की उन्होंने फायदा उठाया। गुरु की दया और सेवक की कमाई दोनों ही चीजें साथ–साथ चलती हैं अगर सेवक कमाई करता है तो सन्त–सतगुरु जरूर अपनी दया–मेहर करते हैं।

संतो सुनो सुनो जन भाई गुर काढी बांह कुकीजै।।
जे आतम कौ सुख सुख नित लोड़ो तां सतगुर सरन पवीजै।।

जिस तरह नाविक समुंद्र के किनारे अपना बेड़ा लाकर कहता है कि आओ भई, जिन्होंने समुंद्र से पार होना है वे आ जाएं, मैं तुम्हें समंद्र की लहरों से बचाकर ले जा सकता हूँ। इसी तरह महात्मा भी संसार में अपने नाम का बेड़ा लाकर आवाजें देते हैं, सतसंग के जरिए लोगों से कहते हैं, ''प्यारेयो, अगर आप अपनी आत्मा को सुख–शान्ति देना चाहते हैं और बार–बार इस देह में नहीं आना चाहते तो आप 'शब्द–नाम' की कमाई करें।'' महात्मा का हमारे साथ दुनियावी रिश्ता नहीं रूहानी रिश्ता है।

बाबा सावन सिंह जी कहा करते थे, ''जिन्होंने अपनी आत्मा पर रहम करना है, सन्तमत उनके लिए होती है। जो लोग यह कहते हैं कि आप हमारे लड़के को इम्तिहान में पास करें या यह कहते हैं कि हमारा लड़का गुजर गया आपने उसकी रक्षा नहीं की या यह कहते हैं कि कारोबार में घाटा पड़ गया है या हमारा मुकद्दमा फतह नहीं हुआ। ऐसे लोगों ने सन्तमत से क्या फायदा उठाना है। सन्तों के पास नाम है, आप उनसे नाम लेकर नाम की कमाई करें ताकि आप बार–बार इस देह के बंधनों में न आएं।''

सन्त हमें प्यार से कहते हैं अगर आप दुनियावी पदार्थों की ख्वाहिश करके आते हैं, वे ख्वाहिशें एक दिन पूरी होगी अगले दिन फिर नहीं होगी या मन अंदर और ख्वाहिश पैदा कर देगा जब वे पूरी नहीं हुई फिर अभाव आ जाएगा। हम सन्तमत को छोड़कर चले जाएंगे। **सन्त हमें बताते हैं कि हमारे कर्मों के मुताबिक जो प्रालब्ध बन गई है वह हमें जरूर भोगनी पड़ती है। हमारे कर्मों के अनुसार दुनिया के पदार्थ, दुख-सुख मिलते ही रहते हैं। बच्चे आते भी हैं जाते भी हैं। जिन्हें भरोसा होता है, वे अपने भरोसे के मुताबिक दुनियावी मदद भी प्राप्त करते रहते हैं।** सवाल हमारे भरोसे का है लेकिन वे ऐसी शर्त नहीं रखते कि हम खाना तब खाएंगे जब गुरु हमारा यह काम करेगा।

सन्तों का अपना कोई कर्म नहीं होता, वे लोगों का बोझ उठाने के लिए ही संसार में आते हैं। आप देख सकते हैं कि वे किस तरह हमारे ऊपर रहम करके हमारे कर्मों को भुगतवाते हैं लेकिन ऐसे भी प्रेमी हैं जो बीमार है, पत्र में अपनी समस्या लिखते हैं और साथ ही यह भी लिख देते हैं कि आपसे हमारी यह विनती है कि आप हमारा कर्म न उठाएं।

जे वडभाग होय अति नीका तां गुरमत नाम दृढ़ीजै।।

अब आप कहते हैं, ''अगर हमारे ऊँचे भाग्य हों तभी हम 'शब्द-नाम' की कमाई कर सकते हैं और दुनिया की ख्वाहिशों को अंदर से निकाल सकते हैं।''

सभ माया मोह बिखम जग तरीऐ सहजे हररस पीजै।।
माया माया के जो अधिकाई विच माया पचै पचीजै।।

गुरु साहब हमें उन चीजों के मुत्तलिक बताते हैं हम जिन चीजों के बीच फँसे हुए हैं, अब अगर हम 'शब्द-नाम' की कमाई करें तो प्रालब्ध कर्मों की वजह से किसी का जो भी लेन-देन है हम उसका भुगतान कर देते हैं और परमात्मा के दरबार भी पहुँच जाते हैं। जो माया के पुजारी हैं,

माया ही उनका दीन ईमान है वे माया में ही जन्म लेते हैं फिर वहीं कुछ न कुछ बनकर आ जाते हैं।

अग्यान अंधेर महां पंथ बिखड़ा अहंकार भार लद लीजै।।
नानक राम रम रम रम रम रामै ते गत कीजै।।

अब आप कहते हैं कि जो सन्तों की शरण में जाकर 'शब्द-धुन' का सच्चा ज्ञान प्राप्त नहीं करते, दुनिया के इल्म और पढ़-पढ़ाई को ही सच्चा ज्ञान समझ बैठते हैं उनके दिल में **अहंकार** आ जाता है। वे अपने आपको यह समझते हैं कि हमारे जैसा कौन है? वे अहंकार का बहुत सारा भार उठाए फिरते हैं।

गुरु साहब कहते हैं कि हमें साधु की शरण में जाकर उस नाम को प्राप्त करना चाहिए। उस राम को सुनना चाहिए, उसके अंदर ही अपने आपको जज्ब कर देना चाहिए। नाम ही हमारी गति करेगा और परमात्मा के दरबार में जाकर हमारी रक्षा करेगा।

सतगुर मिलै ता नाम दृढ़ाए राम नामै रलै मिलीजै।।

***

25 अक्टूबर 1987

शादी-तलाक

16 पी.एस.आश्रम, राजस्थान DVD - 605(1)

एक प्रेमी *: महाराज जी, मेरा सवाल* ***शादी और तलाक*** *के बारे में है। कोलम्बिया में धार्मिक रीति-रिवाजों के अनुसार और कानूनी रूप से शादियाँ होती है। इन दोनों तरह की शादियों में तलाक की कोई गुंजाइश नहीं लेकिन फिर भी लोग एक-दूसरे से अलग होते हैं और बाद में वे लोग दोबारा शादी कर लेते हैं। ऐसे लोग जब एक-दूसरे से अलग हो जाते हैं तो क्या उनके आपस के कर्म खत्म हो जाते हैं या जब वे नया सम्बंध कायम करते हैं तो क्या वे दोबारा ऐसे नए कर्म बनाते हैं जो कभी खत्म न हों?*

बाबा जी : महाराज कृपाल कहा करते थे, ''हम अपने पिछले कर्मों की वजह से ही शादी के बंधन में बंधते हैं।'' महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''पिछले जन्मों के लेन-देन के कारण ही हमें इस जन्म में प्यार और नफरत होती है अगर हमारा पीछे का लेन-देन अच्छा है तो मियां-बीवी और बच्चों में प्यार बन जाता है। हम एक-दूसरे के प्रति नफरत नहीं करते बल्कि दिल में एक-दूसरे के लिए इज्जत होती है।''

अगर पिछले जन्म से ही हमारा एक-दूसरे के प्रति लेन-देन बिगड़ा हुआ है तो हमें एक-दूसरे के प्रति नफरत होगी। हम वहाँ तक पहुँचे नहीं होते कि यह समझ सकें कि हमारा पिछला कर्म अभी बाकी है या अलग होकर हम एक और नया कर्म बना रहे हैं? ऋषियों-मुनियों ने इस किस्म के कानून बनाए हैं कि शादी चाहे किसी भी देश में हों, धार्मिक रीति-रिवाज से हो या कानूनी रूप से हो, किसी में भी तलाक लेने की गुंजाइश नहीं होती। ये सब हमारे मन के बहाने हैं कि हम अलग होकर या तलाक लेकर कह देते हैं कि हमारे कर्म खत्म हो गए हैं।

जिन महात्माओं की आँखें खुली हैं वे अपने धर्मग्रन्थों में हमें यही संदेश देकर गए हैं कि भूलकर भी तलाक नहीं करना चाहिए। जिसके साथ एक बार शादी हो जाए मरकर ही अलग होवें। महाराज कृपाल और गुरु नानकदेव जी भी यही कहा करते थे, ''मियां–बीवी मरकर ही अलग हों, जीते जी तलाक के बारे में सोचना भी गुनाह है।''

इस बारे में कई पति और पत्नियाँ मुझे पत्र भेजते हैं। मैं सदा यही सलाह दिया करता हूँ कि तलाक देकर अलग हो जाने से मसला हल नहीं होता बल्कि इससे और कई समस्याएं उत्पन्न हो जाती हैं। सच्चाई तो यह है कि हम शादी की महानता को समझने की कोशिश नहीं करते। परमात्मा ने ये जोड़े इसलिए बनाए थे कि हम एक–दूसरे की मदद करते हुए आसानी से अपने जीवन का सफर तय करें और अपने जीवन को स्वर्ग बनाएं।

मैं बताया करता हूँ कि शादी करवाना बुरा नहीं लेकिन हमें शादी के जो नियम बताए जाते हैं उन नियमों का पालन करना बहुत जरूरी है। मियां–बीवी के दिल में एक–दूसरे के प्रति प्यार होना चाहिए। दोनों को एक–दूसरे के प्रति आदर भरे शब्दों का इस्तेमाल करना चाहिए। ऐसा नहीं कि पति जो चाहे पत्नी से कहे, पत्नी पर हाथ उठाए या घर में उसका कोई अधिकार ही न समझे या पत्नी जो चाहे पति से कहे। जब हम एक–दूसरे के प्रति आदर भरा व्यवहार नहीं करते तो यही अलग होने का सबसे बड़ा कारण बनता है।

हम जानते हैं कि आजकल पश्चिम में यही कुछ हो रहा है। मियां–बीवी मामूली सी बात पर तलाक ले लेते हैं। क्या वही मियां–बीवी फिर एक–दूसरे के मिलाप के बिना जिंदगी गुजार लेते हैं? कई औरतों को पहले से भी बुरे पति मिल जाते हैं और कई मर्दों को पहले से भी बुरी पत्नियाँ मिल जाती हैं। कई लोग तो कई–कई बार शादी करवाते हैं, सारी जिंदगी परेशान रहते हैं।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''प्यार तो सारी जिंदगी में एक के साथ ही निभ जाए तो काफी है।'' वे यहाँ तक कहा करते थे कि जिस औरत के बत्तीस खसम हैं या जिस मर्द की बत्तीस पत्नियाँ हैं वे किस–किसको खुश करेंगे? लेन–देन और कर्मों का हिसाब तो एक के साथ पूरा करना ही मुश्किल है। कई लोगों के साथ लेन–देन बनाएंगे तो आपस में कब हिसाब चुका पाएंगे? गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

धन पिर ऐह ना आखीअनि बहन इकट्ठे होइ
एक जोत दोय मूरती धन पिर कहिऐ सोइ

मियां–बीवी का रिश्ता बहुत गहरा है। एक–दूसरे के प्रति इज्जत का व्यवहार करना हमारा पहला फर्ज है। शादी के बाद मियां–बीवी का जीवन ऐसा होना चाहिए:

तैनूं ताप चढ़े मैं हूंगा, तेरी मेरी इक जिंदड़ी

अगर कोई महाराज सावन सिंह जी से पूछता, ''महाराज जी, क्या मैं शादी करवा लूं?'' वे कहते, ''भई देख, अगर तू यह बोझ उठा सकता है तो बड़े शौक से शादी करवा ले, शादी करवाना बुरा नहीं।'' अगर उनसे कोई यह पूछता, ''महाराज जी, मैं शादी न करवाऊँ?'' वे कहते, ''देख भई प्यारेया, अगर तू ऐसे ही जिंदगी गुजार सकता है जगह–जगह व्यर्थ की भाग–दौड़ नहीं करेगा तो तू शादी मत करवा।''

आमतौर पर देखा गया है कि किसी–किसी जोड़े के साथ ही गंभीर समस्या होती है लेकिन आम लोगों ने तलाक को दिल बहलाने का काम बना रखा है। मेरे पास एक मियां–बीवी आए, बीवी ने मुझसे कहा, ''मेरा मन करता है कि हम अलग हो जाएं।'' मियां ने मुझसे कहा, ''मैं इसके बिना मर जाऊँगा।'' मैंने उस लड़की से पूछा, ''बेटी, तुझे क्या तकलीफ है ताकि मैं इससे कहूँ कि यह तेरी सहायता कर दे?'' बीवी ने कहा, ''मुझे किसी तरह की कोई समस्या नहीं है। हमें इकट्ठे रहते हुए चार–पाँच साल हो गए हैं, मेरा ख्याल है कि अब हमारा अलग हो जाना ही ठीक है।''

77 आर.बी. का वाक्या है, एक मियाँ ने गलती से सुबह अपनी बीवी को जगा दिया कि सुबह भजन करना अच्छा है, मुझे भजन में रस आया है, चल हम भजन करें। उस लड़की ने इंटरव्यू में मुझसे कहा, ''इसने मेरी नींद हराम की है, मैं इसके साथ नहीं रहना चाहती।'' आप सोचकर देखें, क्या यह भी कोई समस्या है अगर पति ने यह कह दिया कि मुझे भजन में रस आया है तू भी उठ चल हम भजन करें। हर सतसंगी का फर्ज है कि एक–दूसरे से प्यार करें, प्यार से एक–दूसरे को भजन करने की सलाह दें। कबीर साहब कहते हैं:

सुत्ता साध जगाईऐ करे नाम का जाप
तीनों ते सुत्ते भले साकत सिंह और सांप

प्यारेयो, सतसंग में बताया जाता है कि संसार में ऐसा कोई आदमी नहीं जिसके सारे काम पूरे हो गए हों, दिल में कोई लालसा न हो ताकि वह आसानी से शरीर छोड़ सके। आमतौर पर किसी के दस काम पूरे हो गए और पाँच काम अधूरे रह गए, किसी के पाँच काम पूरे हो गए और दो काम अधूरे रह गए। आखिरी समय में अधूरे कामों के संकल्प–विकल्प आँखों के सामने आ जाते हैं कि मैंने यह काम नहीं किया। उन संकल्पों के मुताबिक हमारा अगला जन्म बन जाता है, अगले जन्म में ये चीजें बड़ी आसानी से मिल जाती हैं लेकिन और बहुत सी समस्याएं मुँह खोले खड़ी होती हैं। इसी तरह हमारे जीवन का सिलसिला चलता रहता है।

सन्त–महात्मा आमतौर पर यही कहते हैं कि आप सिमरन करें, गुरु को अंदर प्रकट करें। आपका मन शान्त रहे ताकि अन्त समय में आप हों और आपका गुरु हो, आपको तीसरी कोई चीज याद न आए।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''जो शाम को घर आ जाए उसे भूला न जानें।'' यह अच्छी बात है कि जो लोग दोबारा इकट्ठे हो जाते हैं, वे व्यर्थ की परेशानियों से बच जाते हैं, इकट्ठे होकर उन्हें दोबारा वही

गलतियाँ नहीं करनी चाहिए जो उन्होंने पहले की थी बल्कि उनमें सुधार करना चाहिए। अपने जीवन को फिर से स्वर्ग बनाना चाहिए।

सन्तमत में किसी औरत को पति के साथ सती होने की इजाजत नहीं। हम राजस्थान के जिस इलाके में बैठे हैं यहाँ की सरकार ने इस बारे में बहुत सख्त कानून बनाए हुए हैं। सती होने वाली औरत को आत्मघात का दोष लगेगा, जो उसे सती होने के लिए उकसाएगा उसे सात साल की सजा होगी। राजस्थान के मूल निवासी इसके लिए आंदोलन कर रहे हैं। पिछले सितम्बर में एक नौजवान लड़की अपने पति के गुजर जाने पर उसके साथ सती हो गई। इस बात ने बहुत जोर पकड़ा हुआ है, उनके रिश्तेदार, भाई–बहन जेल में बंद हैं। सन्तमत कभी भी आत्मघात करने की इजाजत नहीं देती। सन्त तो यह कहते हैंः

सतीआ ऐह न आखीअनि, जो मड़िआ लग जलंन्
सतीआ जाणीअन् नानक, जि बिरह चोट मरंन्

जो पत्नी, पति के मरने पर उसके साथ चिता में जल जाती है वह मुक्ति प्राप्त नहीं करती। जो पति के मरने के बाद अपने पति की याद में पवित्र जीवन बिताती है, व्यभिचार नहीं करती, उसका चरित्र अच्छा होता है, उन स्त्रियों की पहुँच स्वर्गों तक हो जाती है।

जब हमारी शादी टूट जाती है, हम कोई महापुरुष तो नहीं हैं कि एक–दूसरे को माफ कर दें। बेशक हम कह देते हैं कि मैंने तुझे माफ कर दिया लेकिन मन की आदत है कि यह फिर भी दूसरे के प्रति नफरत करता रहता है। मैं बताया करता हूँ कि बुराई का मुँह सदा गिरावट की तरफ होता है, एक बुरा विचार भी अभ्यासी को ब्रह्मांड की चोटी से नीचे गिरा देता है। जिन सतसंगियों का जीवन ऐसी समस्याओं से भरा होता है क्या वे भजन कर सकते हैं, अंदर तरक्की कर सकते हैं, क्या वे अपना नुकसान नहीं कर रहे होते?

एक बार शाम का समय था, हम आर्मी में से आए थे। महाराज सावन सिंह जी बैठे थे, हममें से एक आदमी ने उनसे कहा, ''महाराज जी, मेरी काफी चढ़ाई थी, मैं अंदर जाता था, सूरज–चन्द्रमा, तारे और प्रकाश सब कुछ ही देखता था यहाँ तक कि आपका स्वरूप भी मेरे अंदर प्रकाशमान था लेकिन अब मुझे अंधेरे के सिवाय कुछ भी नजर नहीं आता।'' महाराज जी ने उसकी तरफ देखकर कहा, ''तुझे कोई समस्या होगी?'' उसने बताया, ''मेरी पत्नी की मृत्यु हो गई है मुझे उसकी याद सताती है।'' जिसका उसके ऊपर बहुत बुरा असर हुआ।

हम लोग अलग–अलग जीवन कर लेते हैं। जब वे मियाँ–बीवी एक–दूसरे के सामने आते हैं तो क्या सोचते हैं, क्या मन एक–दूसरे के प्रति समस्याएं खड़ी नहीं करता, क्या एक–दूसरे के साथ बिताया हुआ समय याद नहीं दिलाता? इससे अंदर परेशानी हो जाती है जिनकी सुरत ऊपर जाती है वह भी नीचे आ जाती है।

ऐसा नहीं कि पश्चिम के सभी लोग तलाक लेते हैं। अमेरिका, कोलम्बिया और यूरोप में भी बहुत मजबूत मियाँ–बीवी मिलते हैं। कमजोर मन बकरी की तरह होता है जो अपनी जिम्मेदारियों से भागता है। मजबूत मन हाथी की तरह होता है वह विश्वास के साथ शादी करवाता है, जिम्मेदारियाँ उठाता है और उन्हें निभाता है।

***एक प्रेमी** : अगर कोई प्रेमी सन्तमत से भटक जाए, सतसंग में आना छोड़ दे तो क्या हम उसे सतसंग में आने का न्यौता देकर या किसी और तरीके से उसे सन्तमत में वापिस लाने की कोशिश करनी चाहिए या हमें सब कुछ गुरु के भरोसे छोड़ देना चाहिए? क्योंकि गुरु ने जिसे नाम दिया है, गुरु उसकी देखभाल तो करेगा ही।*

बाबा जी : हाँ भई, बड़ा अच्छा सवाल है यह सवाल हर सतसंगी के फायदे का है। सेवक मन के बहकावे में आकर भटक जाता है, आखिर उसे

वापिस आना पड़ता है क्योंकि गुरु सेवक को नहीं छोड़ता, सब कुछ शब्द रूप गुरु के हाथ में है। महाराज कृपाल कहा करते थे, ''गुरु डोरी ढीली जरूर कर देता है लेकिन छोड़ता नहीं।''

मैं बताया करता हूँ कि सृष्टि को देखने के दो ही तरीके होते हैं। जीव का दृष्टिकोण नीचे से ऊपर की तरफ देखने का है और सन्तों का दृष्टिकोण ऊपर से नीचे की तरफ देखने का है। हम जब ऊपर से नीचे की तरफ देखते हैं तो हमारी चढ़ाई ऊपर की तरफ हो जाती है तब हमें समझ आती है कि 'शब्द रूप' गुरु पत्ते–पत्ते के अंदर है। वह सब कुछ खुद करता है खुद ही जीव को नाम के लिए, सतसंग के लिए बुलाकर लाता है। वह खुद ही नजदीक लाता है और खुद ही दूर करता है। गुरु नानकदेव जी ने अपने एक शब्द में कहा हैः

आप पकावै आप भांडे दे, परोसै, आपे ही बह खावै
आपे जल आपे दे छिंगा, आपे चुली भरावै
आपे संगत सद बहालै, आपे विदा करावै

वह आप ही संगत को बुलाता है, आप ही संगत को कतारों में बिठाता है, आप ही बर्तन परोसता है। आप ही आशीष देता है कि हमारी बहुत सेवा हुई। सन्तों का दृष्टिकोण ऊपर से नीचे की तरफ होता है। आप भजन पढ़ते हैंः

मैंनू तेरे बिना किसे दी न लोड़ दातेया

इस भजन में यही है कि तू मुझे जहाँ भेजता है, मैं वहाँ जाता हूँ, सदा तेरा दिया हुआ ही खाता हूँ। मुझे तेरे बिना और कोई दिखाई ही नहीं देता। आप सोचकर देखें अगर हमारी दृष्टि ऊपर से नीचे की तरफ देखने वाली बन जाए तो हम ऊपर पहुँच जाएंगे, भटकेंगे नहीं।

आप एक भजन में यह भी पढ़ते हैं कि वह अपनी दवाई आप ही तैयार करता है, आप ही मरीज होता है और आप ही दवाई खाता है। आप ही बीमार होकर हाय–हाय करता है और आप ही वैद्य बनकर आता है। जब हम

जीव के दृष्टिकोण से देखते हैं तो पता लगता है कि हर जीव अपना अच्छा या बुरा कर्म खुद बना रहा है। किसी खास ताकत के अधीन होकर दुनिया का कारोबार कर रहा है।

जो जीव मन के कहने पर गुरु के रास्ते से भटक जाता है, उस समय हम सबका फर्ज बनता है कि हम उस भटके हुए को गुरु के रास्ते पर लाने की कोशिश करें क्योंकि गुरु के रास्ते से भटके हुए को, नाम के रास्ते पर लाना बहुत बड़ी सेवा है। सन्तमत में इस सेवा को सबसे उत्तम गिना गया है। सेवक को गुरु घर में मान मिलता आया है अगर उसका मन उसे अच्छे–बुरे का ज्ञान रहने देता तो वह भटकता ही नहीं।

आपको पता ही है कि जब उसके कर्मों का भुगतान हो जाता है तो मन में सदा वे ख्याल नहीं रहते, फिर वह सतसंग की तरफ आ जाता है। पता नहीं वह कितने सालों के बाद सतसंग की तरफ आया है। उसके इतने साल खराब हो जाने पर उसे बहुत घाटा हो गया है। सही रास्ते पर आकर वह भजन–सिमरन और सतसंग ही करेगा अगर हम थोड़ा सा परिश्रम करके उसे समझा दें तो हमें उसके भजन में से कुछ न कुछ जरुर मिलेगा।

ऐसे मौके पर हम दो किस्म के काम कर रहे होते हैं, एक तो हम उस भूली हुई प्रेमी आत्मा की सेवा कर रहे होते हैं, दूसरा हम गुरु के मिशन में मदद कर रहे होते हैं। आप गुरु की ड्यूटी की तरफ भी देखें, गुरु कभी निराश नहीं होता। गुरु बहुत सब्र भरा होता है अगर काल इस जीव को बुरे से बुरे कर्म की सजा भी देता है फिर भी गुरु बख्शवाता है और वायदा करता है कि मैं इसे जरूर समझाऊँगा, यह भूला हुआ है इसकी गलती को माफ किया जाए। अब आप सोचकर देखें, अगर गुरु हमारी तरह यह सोचे कि इसे इसके हाल पर छोड़ दें तो फिर गुरु अपने सेवकों को कैसे ले जा सकता है?

महाराज कृपाल कागभसुंड का प्रसंग सुनाया करते थे कि वह घमंड में आकर अपने गुरु का अनादर कर बैठा। गुरु सब्र वाला था, चुप रहा लेकिन

कुदरत का कानून किसी को माफ नहीं करता। गुरु निंदक के लिए कोई ठिकाना नहीं हो सकता। जब उसे दण्ड मिलने लगा, कड़ी योनियों में भेजने लगे तो गुरु की चीख निकल गई कि यह अनजाने में गलती कर बैठा है आप इसे बख्श दें। गुरु के इतना कहने पर भी वह पूरी माफी का हकदार नहीं हुआ उसे नरक में भेजने की बजाय कौए की योनि दी गई।

हमारा इतिहास इस बात का गवाह है कि हिन्दुस्तान में हिरण्यकश्यप बहुत शक्तिशाली राजा हुआ है, वह अपना नाम जपवाता था। उसने भी अपने गुरु नारद की अवज्ञा की थी, उसे इतना बड़ा कलंक मिला कि ग्रंथों में उसे दुष्ट कहकर लिखा गया है, वह नरक का हकदार हुआ। इसी तरह हमें रावण की कहानी मिलती है, उसके गुरु विष्णु भगवान थे, जब रावण, विष्णु भगवान की आज्ञा भंग करके विषय–विकारों में खज्जत हुआ तो उसकी भी हालत हिरण्यकश्यप से बुरी हुई। उत्तरी भारत के लोग हर साल रावण की नकल बनाकर उसे जलाते हैं, बुरा कहते हैं, सदा ही रावण के सिर पर राख पड़ती है। मरने के बाद भी लोग इन्हें दुष्ट कहते हैं।

जरासंध बहुत शक्तिशाली राजा था, वह विष्णु भगवान का द्वारपाल था। जरासंध ने विष्णु भगवान की आज्ञा भंग की, कृष्ण के साथ युद्ध भी किया। इतिहास में आता है, उसकी भी वही दुर्दशा हुई, उसे किसी ने भी माफ नहीं किया। उसको भी दुनियावी लोग बुरा कहकर ही बयान करते हैं।

हमारे इतिहास बताते हैं कि गुरु जितना कोई भी हमदर्द नहीं। जो सेवक अंदर जाते हैं वे जानते हैं अगर हम कठिन से कठिन समय में भी सच्चे दिल से विनती करते हैं तो गुरु जरूर आता है और मदद करता है। अगर हमें किसी भटक चुकी आत्मा के साथ हमदर्दी है जो अपना रास्ता छोड़कर काल के पंजे में आ चुकी है, बहुत दुखी है तो क्या हमें उस पर तरस नहीं आएगा? हमें उस पर तरस आना चाहिए क्योंकि उसके अंदर हमारा गुरुदेव बैठा है। हमारे अंदर उस आत्मा के लिए दर्द होना चाहिए कि शायद यह हमारे

थोड़े से समझाने से रास्ते पर आ जाएगा। समय आने पर वह जरूर आपकी प्रशंसा करेगा, आपका धन्यवाद करेगा।

गुरु गोबिंद सिंह जी से उनके सेवकों ने पूछा कि आप जिस पर दयालु होते हैं उसे क्या देते हैं? उन्होंने कहा, ''मैं जिस पर दयालु होता हूँ उसके घर किसी शिष्य को भेज देता हूँ, वह उसे खाना खिलाएगा, उसका अन्न पवित्र हो जाएगा। वह शिष्य वहाँ वचन सुनाएगा अगर मैंने इससे भी ज्यादा दया करनी हो तो मैं उसके घर में साध–संगत भेज देता हूँ ताकि बहुत से लोग मिलकर वहाँ शब्द बोलेंगे, गुरु कथा करेंगे और भूले–भटके सभी प्रेमी प्रभु भक्ति की तरफ लग जाएंगे।'' गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैं:

जिथै नाम जपीऐ प्रभ प्यारे, से असथल सोइन चौबारे
जिथै नाम न जपीऐ मेरे गांइदा, सेई नगर उजाड़ी जिओ

गुरु नानकदेव जी की लेखनियों में अनेकों जगह आता है कि वह घर, धरती और जीव अच्छे हैं जिनके घर सतसंगी जाते हैं। वहाँ भजन–पाठ करते हैं, सतसंग होता है, वह झुग्गियाँ भी महलों जैसी शोभामान होती हैं। वह बसता हुआ नगर भी किसी काम का नहीं जहाँ बैठकर परमात्मा का नाम नहीं जपा जाता।

प्यारेयो, आप जानते हैं जो भटक जाता है वह पहले प्रेमी होता है तभी नाम लेता है और उसके अंदर गुरु का दर्द होता है लेकिन हमारा जानी दुश्मन मन हमारे अंदर बैठा है। यह मन मौके की ताक में रहता है कि मैं कब इसे सतगुरु के रास्ते से भटका दूँ अगर हम भजन–सिमरन में लग जाते हैं, साध–संगत में हाजरी लगाने लग जाते हैं तो भटकते नहीं।

आप गुरुदेव महाराज कृपाल की तरफ देखें, उनके दिल में आत्माओं के लिए कितनी कद्र थी कि वे लोगों को महाराज सावन सिंह जी के सतसंग में जाने के लिए किराए के पैसे देते थे। क्या यह छोटी सेवा है, क्या वे लोग भूले हुए नहीं थे जिन्होंने कभी सतसंग ही नहीं सुना था?

इसलिए हमें उनकी शिक्षा पर अमल करना चाहिए अगर कोई भटकता है तो उसे प्यार से जरूर समझाएं।

एक प्रेमी *: गुरु और शिष्य का रिश्ता कब शुरु होता है? शिष्य के जन्म लेने के समय या जब गुरु उसे 'नामदान' देता है?*

बाबा जी : हाँ भई, यह सब पहले से तय होता है। जन्म लेने से पहले प्रालब्ध बन जाती है कि कब गुरु मिलेगा, इसे गुरु पर भरोसा आएगा या नहीं? गुरु रामदास जी कहते हैंः

जिन मस्तक धुर हर लिखया, तिना सतगुरु मिलया राम राजे
अज्ञान अंधेरा कटया, गुरु ज्ञान घट बलया
हर लथा रतन पदार्थों, फिर बहुड़ि न चलया
जन नानक नाम आराधया, आराध हर मिलया

हमारे मस्तक में लिखे हुए के मुताबिक जिस दिन गुरु मिल जाता है, नाम मिल जाता है हम उस दिन को भाग्यशाली दिन समझते हैं। यही दिन हमारी जिंदगी में सबसे उत्तम दिन था जिस दिन हमें 'नाम' मिला। जिस तरह कोई प्यासे को पानी पिला दे, प्यासा आदमी पानी पिलाने वाले को अपना सब कुछ ही देने के लिए तैयार हो जाता है। आमतौर हम संगत में यह भजन पढ़ते हैंः

नानक सतगुरु तिना मिलाया, जिना धुरे पया संजोग।

***

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के मुखारविन्द से

परमात्मा की तलाश

एक यादगार दास्तान

जिन्हें सच्चा इश्क होता है वे परमात्मा से प्यार करते हैं, उन्हें बचपन से ही परमात्मा की तलाश होती है। उन्होंने परमात्मा को देखा तो नहीं होता लेकिन वे ऐसा महसूस करते हैं कि उनका कुछ गुम हो गया है। वे हमेशा ही अंदर से उदास रहते हैं और उस परमात्मा से मिलने की इंतजार करते रहते हैं। अगर कोई उनसे पूछता है कि तुम उदास क्यों हो, क्या तुम्हारी कोई वस्तु गुम हो गई है? बाहरी तौर पर वे कहते हैं, ''मैं ठीक हूँ।'' वे परमात्मा को न देख पाने की वजह से उदासी महसूस करते हैं।

सभी सन्तों की उदासी का यही कारण है, गुरु नानकदेव जी को भी यही उदासी थी। जिस वजह से लोग यह कहते कि इसका दिमाग खराब हो गया है, इसमें सोचने समझने की शक्ति नहीं, इस पर किसी भूत-प्रेत का साया है। बहुत से सन्तों की जिंदगी में ऐसा होता है कि वे जब उदासी के दौर से गुजर रहे होते हैं, लोग उनके लिए ऐसी बातें बनाते हैं। सन्त इस उदासी को महसूस करते हैं और वे जानते हैं कि वे क्या तलाश रहे हैं।

ऐसे प्यारों को बचपन से ही अपने अंदर प्यार के संदेश मिलते रहते हैं। अगर उनका जन्म अमीर परिवार में होता है तो वे अमीरी को ठुकराकर भक्ति करते हैं। अगर उनका जन्म गरीब परिवार में होता है तो वे अमीरी की इच्छा नहीं रखते, सांसारिक धन-पदार्थ इकट्ठा नहीं करते। उनकी इच्छा सिर्फ परमात्मा को पाने की होती है। वे हमेशा परमात्मा के बिछोड़े के लिए तड़पते हैं, परमात्मा से मिलाप चाहते हैं।

मैं मौत के रहस्य के बारे में सोचा करता था, इस बारे में मैंने अपनी माता के गुरुभाई से भी पूछा। उसने मुझे बताया कि इस रहस्य को कोई

सन्त–महात्मा ही सुलझा सकता है। इस रहस्य को सुलझाने के लिए मैंने अपना घर छोड़ दिया और साधु–सन्तों की तलाश में निकल पड़ा। उस समय मेरी बहुत इच्छा थी कि मेरे अंदर का पर्दा खुल जाए ताकि मैं गुरु को अपने अंदर प्रकट कर सकूँ। शुरु से ही मेरी जिंदगी एक त्यागी की रही है। मेरे परिवार के लोग मुझे सांसारिक जीवन के लिए प्रेरित करते थे लेकिन मैं किसी ऐसे की तलाश में था जो मुझे परमात्मा की भक्ति करने का तरीका सिखा सके।

जब मैंने **परमात्मा की तलाश** शुरु की और घर छोड़ा, उस समय मेरी माता मेरे साथ तीन मील तक पैदल चलकर आई। उसने मुझसे कहा, ''प्यारे बेटे, तुम शादी कर लो फिर मैं तुम्हें भक्ति करने से नहीं रोकूंगी।'' मैंने कहा, ''माता, फिर तो तुम्हें मुझे भक्ति करने के लिए कहने की जरूरत ही नहीं पड़ेगी अगर मेरी किस्मत में शादी लिखी होगी तो वह व्यक्ति मुझे जरूर मिलेगा।''

उस समय मेरी माता ने मुझसे कुछ वादे लिए, उसने मुझसे कहा, ''प्यारे बेटे, अगर तुम शादी करना चाहो तो घर आकर ही शादी करना। हमें यह सुनने को न मिले कि आपके बेटे के किसी औरत के साथ सम्बंध हैं।'' मैंने अपनी माता से वादा किया अगर मैं अपने आप पर काबू नहीं रख सका तो मैं जरूर शादी कर लूँगा। मैंने आपका दूध पिआ है, उसे बदनाम नहीं होने दूँगा और कभी कोई ऐसा काम नहीं करूंगा।

मुझे मेरी माता से बहुत प्यार मिला, जिस तरह उसने मेरी देखभाल की, सौ माताएं भी अपने बच्चे को ऐसा प्यार नहीं दे सकती। मुझे अफसोस है कि मैं अपनी माता की यह सांसारिक इच्छा पूरी नहीं कर सका क्योंकि मेरी माता मेरी शादी करना चाहती थी जो मैं नहीं कर सकता था।

मेरी माता ने मुझसे यह भी वादा लिया कि तुम हमेशा अपने खरीदे हुए कपड़े ही पहनना अगर कोई तुम्हारे लिए कपड़ा या कोई वस्तु लाता है

तो तुम पहले उसकी कीमत दोगे फिर उस वस्तु का इस्तेमाल करोगे। मैं अपनी माता को दिए हुए इस वादे को आज तक निभा रहा हूँ।

हिन्दुस्तान में अध्यात्म के नाम पर बहुत धार्मिक जातियाँ और सस्थान हैं, मैं उनमें से बहुत जगह गया। उन दिनों में यातायात के ज्यादा साधन नहीं थे इसलिए मुझे काफी पैदल यात्रा करनी पड़ी। मैं बहुत दिशाओं में बहुत लोगों के पास गया, मैं जंगलों और पहाड़ों पर भी गया। मैं वहाँ नजारे देखने या घूमने-फिरने के लिए नहीं गया था। मुझे जब भी पता चलता कि किसी जगह कोई महात्मा रहता है, मैं उससे जरूर मिलता।

मैं बहुत से सन्त-महात्माओं के पास गया, कई तरह के सिक्ख महात्माओं के पास भी गया। उन दिनों हिन्दुस्तान में लोग जो धर्म-कर्म किया करते थे, मैंने वे सब धर्म-कर्म किए। पानी की सब क्रियाएं की। सभी कर्मकांड किए, मंदिरों-मस्जिदों और पवित्र स्थानों पर भी गया।

उस समय हिन्दुस्तान में लोग जाति-पाति को बहुत महत्त्व देते थे। मेरे लिए सारे धार्मिक स्थान एक जैसे थे। मैंने किसी से नफरत नहीं की, किसी की आलोचना नहीं की, मैं सब जगह प्यार और विश्वास के साथ गया। मुझे उन धार्मिक स्थानों में कोई अंतर दिखाई नहीं दिया क्योंकि मैं तो परमात्मा की तलाश कर रहा था।

बहुत बार मुझे पूरा खाना भी नहीं मिलता था। मेरे पास चने होते थे मैं थोड़े से चने चबाकर पानी पी लिया करता था। कई बार मैं सारा दिन भूखा-प्यासा भी रहा। बहुत बार सोने की जगह नहीं मिलती तो मैं जमीन पर ही सो जाता था। लोग मेरी यह स्थिति देखते तो मुझे ताने मारते। बहुत से लोगों ने मुझसे यह भी कहा कि तुम ऐशो-आराम की जिंदगी छोड़कर यहाँ-वहाँ क्यों भटक रहे हो, क्या तुम्हारी दिमागी हालत ठीक नहीं?

मेरे अंदर परमात्मा को पाने की इच्छा थी। मैं जब चल रहा होता या कुछ भी कर रहा होता, हर समय परमात्मा के लिए ही तड़प रहा होता

था। मैं सोते-जागते, उठते-बैठते यही सोचा करता था क्या कोई ऐसा दिन आएगा जब मेरा मिलाप परमात्मा से होगा।

मेरा जन्म सिक्ख परिवार में हुआ था। मुझे ऐसा लगता था कि जहाँ कभी पूर्ण गुरु गए थे शायद उन पवित्र स्थानों की यात्रा करने से शान्ति-मुक्ति मिलती है इसलिए मैं उन धर्मस्थानों पर गया लेकिन मुझे उन महान मंदिरों से शान्ति नहीं मिली।

उस समय मुझे ऐसा लगता था कि परमात्मा सिर्फ सिक्खों के गुरुद्वारों में ही रहता है, जो कि एक कीमती इमारत होती है। लोग वहाँ जाकर 'भाई जी' का बहुत आदर करते हैं। मैं सोचता कि 'भाई जी' परमात्मा से मिले होंगे या परमात्मा को जानते होंगे? मैं उनसे मिलकर सन्तुष्ट नहीं हुआ बल्कि बहुत हतोत्साहित हुआ।

मैं पंजाब में एक जगह प्रसादवाली नामक गाँव में गया, मैंने वहाँ एक ऐसे महात्मा के बारे में सुना जो अपने आपको साधु कहलवाता था। वह बहुत मशहूर था, करामाती था। वह अपनी देह को शेर, चीते या किसी भी जानवर की देह में पलट लेता था और वह उड़ भी सकता था। लोग उस साधु की बहुत प्रशंसा करते थे।

मैंने उस साधु के साथ छह महीने बिताए और पूरे दिलोजान से उसकी सेवा की। मेरी सेवा से खुश होकर उस साधु ने मुझसे कहा, ''मैं तुझसे बहुत खुश हूँ और मैं तुझे वह हुनर दे सकता हूँ जो मेरे पास है। मैं तुझे साँप, चीते और जानवरों की देह में परिवर्तन करना सिखा सकता हूँ।'' मैंने उससे कहा, ''बाबा, मैंने यहाँ आकर आपकी सेवा की, आपके दर्शन किए, मैं इस मनुष्य शरीर से ऊपर जाना चाहता हूँ, जानवरों की देह में अपना परिवर्तन नहीं करना चाहता। अगर मैं बुरे काम करूँगा तो निश्चित रूप से मुझे निचली देह मिलेगी।''

उस महात्मा ने कहा, ''मेरे पास सिर्फ यही हुनर है अगर तुम चाहो तो इसे प्राप्त कर सकते हो।'' मुझे देह पलटने वाला हुनर अच्छा नहीं लगा इसलिए मैंने वह हुनर नहीं सीखा। उस साधु ने मुझे एक किताब दी जिसमें पूर्ण सन्तों की कुछ निशानियाँ दी हुई थी। जब मैंने वह किताब पढ़ी तो मुझे उस साधु में पूर्ण सन्त जैसी कोई भी निशानी नहीं मिली इसलिए मैंने उस साधु का साथ छोड़ दिया।

उस समय हिन्दुस्तान में कई महान योगी और साधु थे, जो बाहरी तौर पर बड़ी श्रद्धा से परमात्मा का नाम दोहराते थे। मैं उनसे भी मिला, उनमें से एक ने मुझे एक मन्त्र को दिन में 24000 बार दोहराने के लिए कहा। उस समय मैंने एक माला बनाई। परमात्मा के प्यार में, उसके बिछोड़े के दर्द में मैंने उस मन्त्र को 48000 बार दोहराया, मेरे हाथों में छाले पड़ गए लेकिन मुझे शान्ति नहीं मिली। मुझे समझ आई कि बाहरी तौर पर परमात्मा का नाम–मन्त्र दोहराने से बहुत सी करामाती ताकतें मिल जाती हैं लेकिन ये हमें दुनिया की मान–बड़ाई में फँसा देती हैं।

उसके बाद मैं लाहौर में एक साधु से मिलने गया वह भी करामाती साधु था। जो उसके पास जाता वह उसे बता देता कि उस इंसान के दिल में क्या है? लेकिन मुझे उससे संतुष्टि नहीं मिली। मेरे विचार में ऐसी क्रियाओं का क्या फायदा जिनके करने से आत्मा को शान्ति न मिले।

जैसा कि गुरु नानकदेव जी ने 'नाम' के बारे में लिखा है, मैं तो उस नाम के लिए तड़प रहा था। मुझे किसी किस्म की करामातों में रूचि नहीं थी। मेरी ऐसी रूचि देखकर इस साधु ने मुझे 'हे राम, हे गाबिंद' का मन्त्र दिया। मैंने इस मन्त्र को कई सालों तक दोहराया।

***

परम सन्त अजायब सिंह जी द्वारा प्रेमियों को भजन में बिठाने से पहले

भजन-अभ्यास

19 जून 1992

हम अपने गुरुदेव सावन-कृपाल के चरणों में नमस्कार करते है, जिन्होंने हमें अपनी याद में बैठने का मौका दिया है। सिमरन करना, विनती करना, प्रार्थना करना इन सबका एक ही मकसद है कि जब जीव बेबस हो जाता है इसका कोई चारा नहीं चलता फिर यह अपने से मजबूत के आगे फरियाद ही करता है। हम अपने गुरुदेव के आगे फरियाद करते हैं कि हे सतगुरु, तू हमारी फरियाद मंजूर कर, हमारे ऊपर रहम करके हमें अपनी भक्ति का दान दे।

आत्मा को 'शब्द' के साथ जोड़ने के लिए शरीर का निचला हिस्सा खाली करना जरूरी है, सिमरन की सहायता से ही हम इसे खाली कर सकते हैं। सिमरन एक कुदरती साधन है। हमें यह नहीं सोचना चाहिए कि हम जो समय लगा रहे हैं शायद इसकी कोई कीमत नहीं, साँस-ग्रास लेखे में है। सिमरन करना चंचल घोड़े के मुँह में लगाम देने के बराबर है। कबीर साहब कहते हैं, ''इस घोड़े ने हजारों सवार, ऋषि-मुनि पटक कर जमीन पर फैंके हैं। सवार वही है जो इसकी लगाम खींचकर अपने हाथ में रखे।''

मन युगों-युगों से बाहर भटकने का आदी है, इसे तीसरे तिल पर एकाग्र करने के लिए बहुत साल अभ्यास करने की जरुरत पड़ती है। सतसंगी को सब्र और भरोसे के साथ सिमरन करना चाहिए।

सतसंगी को नाम की महानता का पता उस समय लगता है जब वह नौं द्वारे खाली करके आँखों के पीछे आ जाता है। हमारे सफर की दो मंजिलें हैं, एक आँखों तक और दूसरी आँखों से ऊपर है। शरीर के निचले

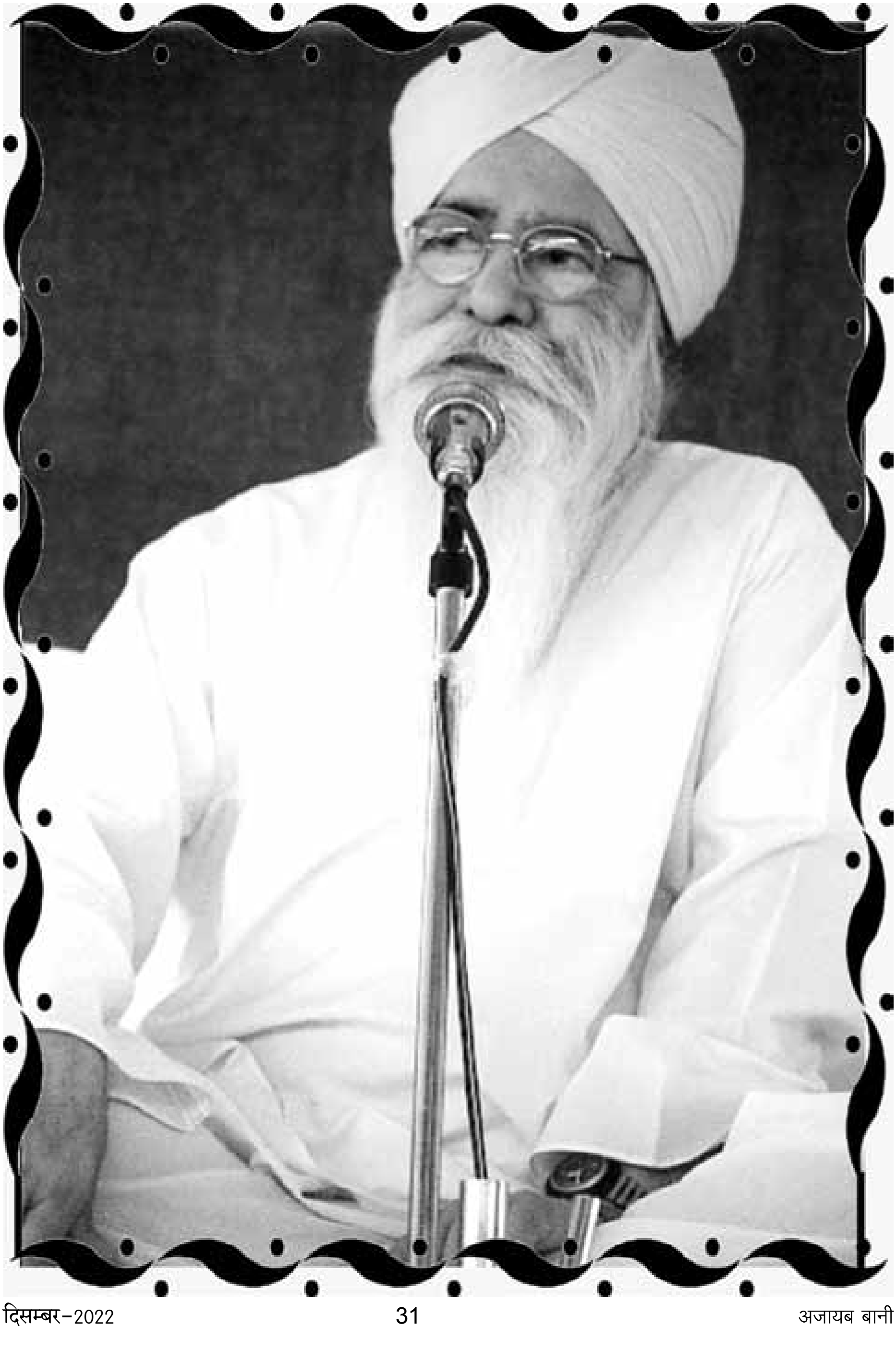

भाग को हम सिमरन की सहायता से ही तय कर सकते हैं। आँखों से ऊपर के भाग को हम 'शब्द' के जरिए पार कर सकते हैं।

सिमरन की सहायता से शरीर का निचला हिस्सा खाली करके तीसरे तिल पर पहुँचना शिष्य की ड्यूटी है। शिष्य के जिम्में वही ड्यूटी लगाई गई है जो वह आसानी से कर सकता है। आगे गुरु का काम है, आगे की मंजिलें गुरु खुद पार करवाता है अगर गुरु हमारे साथ न हो तो हम एक कदम भी अंदर नहीं जा सकते। स्वामी जी महाराज कहते हैंः

शब्द खुलेगा गुरु मेहर से, खींचे सुरत गुरु बलवान

जो सतसंगी अपनी जिंदगी में तीसरे तिल पर एकाग्र होते हैं, वे जानते हैं कि किस तरह गुरु अंदर कदम–कदम पर हमारी मदद करता है।

मैं आशा करता हूँ कि आप सिमरन की महानता को समझें, अंदर गुरु के नूरी स्वरूप तक पहुँचने की कोशिश करें। गुरु सदा ही आपकी इंतजार में बैठा है कि मेरा प्यारा सेवक कब मन–इन्द्रियों की गुलामी से आजाद होकर मेरे पास पहुँचे। आँखें बंद करके सब अपना सिमरन शुरु करें।

***

भजन रोज करें। चलते-फिरते, काम-काज करते हुए सिमरन करते रहें। जब फुरसत हो उस वक्त तो भजन करना ही है, चलते-फिरते भी सिमरन न छोड़ें। सांस-ग्रास गिनती के हैं।

- बाबा जयमल सिंह जी महाराज

RNI No - RAJHIN/2003/9899

सन्त हमें बताते हैं कि हमारे कर्मों के मुताबिक जो प्रालब्ध बन गई है वह हमें जरूर भोगनी पड़ती है। हमारे कर्मों के अनुसार दुनिया के पदार्थ, दुख-सुख मिलते ही रहते हैं। बच्चे आते भी हैं जाते भी हैं। जिन्हें भरोसा होता है, वे अपने भरोसे के मुताबिक दुनियावी मदद भी प्राप्त करते रहते हैं।

- परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज